पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.9.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

दिल्ली प्रान्तीय बैठक

रविवार 15 सितम्बर 2013

सायं 4.00 बजे

आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली-7

निवेदक:

राम कुमार सिंह — प्रान्तीय संयोजक
सन्तोष शास्त्री — प्रान्तीय महामन्त्री

वर्ष-30 अंक-07 श्रावण-2070 दयानन्दाब्द 190 1 सितम्बर से 15 सितम्बर 2013 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.9.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35 वें स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन' सौल्लास सम्पन्न

हिन्दू कहने व लिखने में गौरव का अनुभव होना चाहिये-स.जोगेन्द्र सिंह (पूर्व निदेशक,सी.बी.आई)

परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट का विमोचन करते डा.अशोक कु0 चौहान, श्री जोगेन्द्र सिंह, डा.अनिल आर्य, श्री यशपाल आर्य (पार्षद), श्री दर्शन अग्निहोत्री, डा.महेश विद्यालंकार व श्री मनोहरलाल चावला एवं श्री जोगेन्द्र सिंह का अभिनन्दन करते डा.अशोक कुमार चौहान, डा.अनिल आर्य, प्रवीन आर्या।

नई दिल्ली। रविवार,1 सितम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के 35 वें स्थापना दिवस पर योग निकेतन सभागार, पश्चिमी पंजाबी बाग में **''राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन''** का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के लगभग 14 प्रान्तों से 1500 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

मुख्य अतिथि सरदार जोगेन्द्र सिंह (पूर्व निदेशक,सी.बी.आई.) ने कहा कि आज भ्रष्टाचार, आंतकवाद, पाखण्ड-अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे है, इनका मुकाबला वैचारिक क्रान्ति से ही किया जा सकता है, विचारों की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति होती है, देश में विघटनकारी ताकतें सर उठा रही हैं सरकार को चाहिये कि देश की अखण्डता से खिलवाड़ करने वालो के साथ सख्ती के साथ पेश आये। उन्होंने कहा कि हमें हिन्दू होने व लिखने पर गर्व होना चाहिये जब ईरान का राजा ''आर्य मिहिर'' लिखने में गर्व महसूस करता है हम क्यों शर्माते हैं। देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है, आज फिर से आर्य युवकों को राष्ट्रीय एकता अखण्डता की रक्षा के लिये कार्य करना है।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है और राष्ट्र का भविष्य ऐसे ही नौजवानों पर निर्भर है। आर्य समाज दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा देकर देश की दशा व दिशा को बदलने का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की नीति देश की सम्प्रभुता के लिए घातक है, जो एक नये पाकिस्तान को जन्म देगी।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती(पलवल) ने कहा कि स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलकर ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षा हो सकती है, देश की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने की अत्यन्त आवश्यकता है तभी हम हिन्दू समाज पर हो रहे चौतरफा आक्रमण, बंग्लादेशी घुसपैठ का मुकाबला कर सकते हैं।

वैदिक विद्वान डा.वागीश आचार्य (गुरूकुल एटा) ने कहा कि आज देश की बहुसंख्यक युवा पीढ़ी के लिए देश व समाज के पास कोई ठोस कार्यक्रम नही है, हम युवा पीढ़ी को पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरूडम वाद से बचा कर उनमें नैतिक शिक्षा, देशभक्ति, ईमानदारी, जातिवाद विहीन समाज की संरचना के लिए कार्य करेंगे।

समारोह अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डा. अशोक कुमार चौहान ने कहा कि भारत को विश्व शक्ति बनना है, लेकिन उसमें विचार शक्ति देने का कार्य आर्य जनों को ही करना है। वैदिक विद्वान डा.महेश विद्यालंकार ने अपना जीवन आदर्शमय बनाने का आह्वान किया

(शेष पृष्ठ 3 पर)

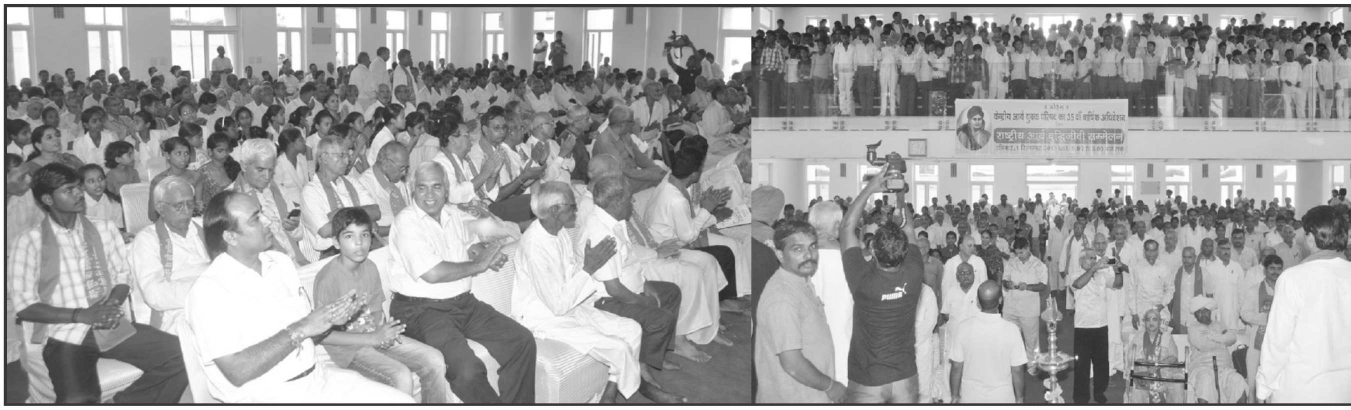

आर्यो से खचाखच भरे योग निकेतन सभागार का सुन्दर द्रश्य

'वेद आज भी प्रासंगिक, उपादेय एवं अपरिहार्य हैं' - मनमोहन कुमार आर्य

वेद मानवजाति का सर्वस्व हैं परन्तु हमारा हतभाग्य है कि आज हम वेदों से पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। ईश्वर व जीवात्मा सृष्टि में चेतन तत्व हैं तथा प्रकृति जड़ तत्व है। चेतन तत्व, ईश्वर और जीवात्मा, का गुण इनमें ज्ञान व क्रिया का होना है। जड़ पदार्थों में क्रिया व किसी उपयोगी परिवर्तन के लिए चेतन तत्व की प्रेरणा की आवश्यकता होती है। जड़ पदार्थों में स्वतः बुद्धिपूर्वक परिवर्तन असम्भव है। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। यह दोनों शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। वेदों का अभिप्राय है कि वेद समस्त ज्ञान का भण्डार हैं एवं उसकी चार संहितायें है जो प्राचीन ऋषियों ने लिपिबद्ध कर पुस्तकों के रूप में सुरक्षित की हुईं हैं। वेदों की उत्पत्ति कैसे हुई, यह स्वाभाविक प्रश्न है। इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वेद में जो ज्ञान है, उसकी उत्पत्ति व रचना मनुष्यों से नहीं हो सकती। अतः यह अपौरूषेय ज्ञान है जिसकी उत्पत्ति मनुष्यों से भिन्न सत्ता ईश्वर के द्वारा हुई है। मनुष्यों को ज्ञान की उत्पत्ति के लिए सर्वप्रथम भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा अक्षरों व शब्दों से बनती है। अक्षरों में ध्वनियां होती हैं। अनेक ध्वनियों में से प्रत्येक स्वतन्त्र ध्वनि को जानकर उसके लिए एक अक्षर निर्धारित करना होता है। प्रथम भाषा बनाने का यह कार्य एक मनुष्य व मनुष्यों के समूह द्वारा कदापि नहीं हो सकता। अतः सृष्टि की प्रथम भाषा भी अपौरूषेय अर्थात् ईश्वर से प्राप्त होती है। विदेशी लोग इस तथ्य को इस कारण स्वीकार नहीं करते कि यह ईश्वर से भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त उनके धर्मग्रन्थ की मान्यताओं के विपरीत पड़ता है और अपने धर्म को येन-केन-प्रकारेण सत्य मानना व रक्षा करना उनका कर्तव्य रहा है, जो कि सत्य के विपरीत होने से उचित नहीं है। संसार में सम्प्रति जितनी भी भाषायें हैं वह सब वेदों की भाषा के विकार हैं जिसमें संस्कृत भाषा वेदों की वैदिक भाषा के सर्वाधिक निकट है। इस विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य को भाषा के रूप में वेदों की भाषा भी ईश्वर से प्राप्त हुई थी। वेद इस संसार को बनाने वाले ईश्वर द्वारा आदि मनुष्यों को दिया गया वह ज्ञान है जिसमें ज्ञान, कर्म, उपासना व विज्ञान विषय सम्मिलित हैं। यदि ईश्वर भाषा व वेदों का ज्ञान न देता तो मनुष्य आज भी अज्ञानी व भाषा से रहित होता। वेदों का ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मनुष्य अपनी बुद्धि का विकास कर सकता है और फिर वह विज्ञान की ऊंचाईयों को छू सकता है, जैसा कि आजकल हो रहा है। वेदों की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार रहा कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि कर बड़ी संख्या में युवा स्त्रियों व पुरूषों को उत्पन्न किया। इनमें सर्वाधिक पवित्र व श्रेष्ठ चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को उनकी आत्माओं में (जीवस्थ-सर्वव्यापक-सर्वान्तर्यामी-आत्मा से भी सूक्ष्म होने के कारण उसके भीतर स्थित व्यापक स्वरूप से) क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान दिया। इन चार ऋषियों ने, ईश्वरीय प्रेरणा से, यह ज्ञान एक-एक करके अन्य ऋषि ''ब्रह्मा जी'' को कराया। ब्रह्मा जी से पठन-पाठन की परम्परा आरम्भ हुई और उन्होंने अन्य सभी स्त्री व पुरूषों को वेदों का ज्ञान दिया। इस प्रकार से वेदों का ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी चलकर अद्यावधि सुरक्षित है।

वेदों में वर्णित विषयों का उल्लेख पूर्व किया है। वेदों के मुख्य विषय ऋग्वेद में तिनके से लेकर ईश्वर पर्यन्त पदार्थो का ज्ञान है। इसी प्रकार यजुर्वेद में कर्म व यज्ञ आदि का, सामवेद में ईश्वर की उपासना का तथा अथर्ववेद में विज्ञान आदि का वर्णन है। वस्तुतः वेदों में बीज रूप में सभी सत्य विद्यायें विद्यमान हैं। वेदों के अनुसार ही सारी दुनियां में गणित के शून्य से 9 तक के अंक, गिनती, पहाड़े, सप्ताह के सात दिन व वर्ष में बारह महीने आदि का एक-जैसा ज्ञान फैला व अद्यावधि प्रयोग में लाया जा रहा है। वेदों में कृषि, अन्न, फल, गोदुग्ध आदि आहार, शिक्षा, वर्षा, वस्त्र, रथ, गाड़ी, पथ, मार्ग व सड़कों, जल या समुद्र यान, नौका, विमान, विद्युत, रक्षा सामग्री व हथियार, देश की सुरक्षा आदि का भी ज्ञान है व इनका अनेकों स्थानों पर प्रयोग किया गया है। वेदाध्ययन कर इन व अन्य-अन्य विज्ञान विषयों का अनुसंधान कर इन विद्याओं का विस्तार किया जा सकता है और नाना प्रकार के उपयोग की सामग्री, यन्त्र-संयंत्र, उपकरण तथा मशीनरी आदि बनाई जा सकती है। कम्प्यूटर भी एक प्रकार से आधुनिक मशीन है जिसमें विद्युत, गणित विद्या, पदार्थ विद्या, शब्द व ध्वनि विद्या, दृश्य विज्ञान आदि नाना विकसित विद्याओं का उपयोग किया गया है। यह पूर्व भी किया जा सकता था। सम्भावना है कि महाभारत युद्ध से पूर्व यह सब ज्ञान रहा होगा। आज यह वस्तुएं हमें पश्चिम के वैज्ञानिकों द्वारा प्राप्त हुई हैं तो इसका कारण है कि उन्होंने उन विषयों पर वैज्ञानिक चिन्तन किया और श्रम व तप भी किया जिसका परिणाम यह वैज्ञानिक सुख-सुविधा की वस्तुओं की उपलब्धियां हैं। विज्ञान की संवृद्धि एवं समस्त खोजों का कुछ श्रेय विश्व की आदि भाषा, वेद-वैदिक-भाषा, को भी है जो अपभ्रंसो, विकारों, परिवर्तनों के साथ सारे विश्व में फैली और उन-उन देशों में एक नई परिवर्तित भाषा के रूप में अस्तित्व में आईं जिसमें चिन्तन व विचार कर हमारे पश्चिमी देशों के वैज्ञानिक विचारकों ने विज्ञान की खोजें सम्पन्न की हैं। यदि प्राचीन वैदिक भाषा न उत्पन्न हुई होती तो अनुसंधान का कार्य सम्भव ही नहीं था। विदेशियों ने हमारे साहित्य से भी प्रेरणा ग्रहण कर अनुसंधान कार्य कर विज्ञान को आधुनिक स्थिति तक पहुंचाया हैं। दूसरी ओर हमारे अपने देश के अल्पज्ञानी लोगों ने महाभारत के भीषण महायुद्ध के बाद उत्पन्न अव्यवस्था के कारण अपने स्वार्थो की पूर्ति व अकर्मण्यता में जीवन व्यतीत किया। ज्ञान का विकास न कर अज्ञान व अन्धविश्वास तथा कुरीतियों को अपनाया जिसके कारण हम दुनियां में पिछड़ गये। विदेशी विद्वानों व वैज्ञानिकों ने विचार, चिन्तन, अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान व बौद्धिक विकास के जो कार्य किये है, उस कारण से सारा संसार लाभान्वित हो रहा है, उससे वह सारी दुनियां के लिए वन्दनीय, अनुकरणीय एवं प्रशंसा के पात्र हैं। सारी दुनियां के धार्मिक व मजहबी लोगों को उनका अनुकरण कर अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों को छोड़ कर सत्य-ज्ञान, सत्य-कर्म व सत्य-उपासना को अपनाना चाहिये, उसी से सबका कल्याण होगा, यही वेदों का सन्देश भी है।

क्या वेद आज के समय में प्रासंगिक हैं?इसका उत्तर हमें हां में मिलता है कि वेद एवं इनका ज्ञान आज भी और सृष्टि के अन्त तक प्रासंगिक, उपयोगी एवं अपरिहार्य रहेगा। वेद बताते हैं कि हमारे जीवन का उद्देश्य केवल सुख आदि भोगों को भोगना ही नहीं अपितु मर्यादाओं के अन्दर भोगों को भोगते हुए यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्मो को करना व सत्य के आचरण द्वारा प्राणी मात्र का हित करना है। वेद हमें जीवन जीने की सर्वांगीण वैज्ञानिक पद्धति देते हैं जो दुनियां के किसी मत, सम्प्रदाय, मजहब व धार्मिक संगठन के पास नहीं है। वेद का एक सन्देश है कि 'हे मानव, तू मानव बन और श्रेष्ठ व दिव्य सन्तान व प्रजाओं को उत्पन्न कर।' श्रेष्ठ व दिव्य जनों को सन्तान के रूप में भी उत्पन्न करने के लिए वैदिक संस्कारों की आवश्यकता है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के पास सन्तानों व प्रजा को श्रेष्ठ व दिव्य बनाने का समाधान नहीं है और न किसी मत-मजहब के पास। इसके अतिरिक्त अशिक्षित, असंस्कारित व अज्ञानियों को ज्ञान, शिक्षा तथा व्रत पालन से उपयोगी बनाया जा सकता है। वेदों का यह सन्देश सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक स्तर पर आचरणीय एवं पालनीय है। मानव बनने का तात्पर्य हममें ज्ञान व विद्या की पराकाष्ठा और अज्ञान का स्तर शून्य प्रायः होना चाहिये। वेदों के वर्तमान युग के सबसे बड़े विद्वान महर्षि दयानन्द ने एक बहुत ही स्वर्णिम नियम दिया है कि सभी मनुष्यों को अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। इसी प्रकार एक अन्य स्वर्णिम नियम है कि सत्य के ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। वेदों का एक सिद्धान्त यह भी है कि सभी मनुष्यों को केवल अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। आज दुःख इस बात का है कि यथार्थ कर्म-फल सिद्धान्त का किसी को ज्ञान ही नहीं है। मोक्ष व अपवर्ग को भूलकर लोग अच्छे व बुरे व अमर्यादित कार्यो से धन संग्रह में लगे हैं, बिना यह विचारे की इसका भावी परिणाम क्या होगा? अच्छे-बुरे कार्यो से धन व सुख-सुविधा की सामग्री का संग्रह ही प्रायः हर व्यक्ति का जीवन-उद्देश्य बना हुआ है। शिक्षा आज एक व्यापार बन चुका है जहां एक निर्धन पात्र व मेधावी बालक विद्यार्जन नहीं कर सकता। दूसरों की उन्नति की किसी को कोई चिन्ता ही नहीं है। अपने असत्य को छुपाने के लिए लोग नाना प्रकार से असत्य का सहारा लेने में संकोच नहीं करते और यहां तक कि झूठी कसमें भी खाते देखे जाते हैं। वेदों की प्रमुख बातें जिस कारण वह आज भी प्रासंगिक हैं और हमेशा रहेगें, आगामी पंक्तियों में प्रस्तुत हैं। वेदों में ईश्वर का सत्य स्वरूप वर्णित है। वह है - ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। इसके अतिरिक्त वेदों का सिद्धान्त यह भी है, जो कि वैज्ञानिक तथ्य को उद्घाटित करता है, 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।' ईश्वर इस संसार का पालन कर्ता व प्रलयकर्ता है। वह सभी जीवात्माओं के जन्म-जन्मान्तरों के क्रियमाण-संचित-प्रारब्ध कर्मो के अनुसार फल देता है। जीवों के सुख व कल्याण के लिए ही उसने इस संसार या ब्रह्मण्ड की रचना की है। ईश्वर का इस प्रकार का सत्य स्वरूप संसार के किसी मत-पन्थ व मजहब के ग्रन्थ में नहीं है। और यही कारण है कि पश्चिमी देशों के विचारशील लोग व वैज्ञानिक उन-उन देशों में प्रचलित धर्म व पन्थों में विद्यमान ईश्वर के कल्पित स्वरूप को नहीं मानते। मनुष्य किस ईश्वर की उपासना करे, तो वेदों के अनुसार ईश्वर के वेद वर्णित स्वरूप का ध्यान करते हुए उपासना करनी चाहिये। वेदों में सब प्रकार का आध्यत्मिक व भौतिक व अन्य ज्ञान है। ईश्वर भक्ति की सही विधि वेदों से ज्ञात होती है। यह सत्य है कि वेदों पर सारी दुनियां के सभी लोगों का समान अधिकार है।यह किसी एक धर्म, जाति व देश की बपौती नहीं है।

वेद बताते हैं कि ईश्वर हमारी माता, पिता, बन्धु, मित्र व सुहृद सहयोगी की भांति है। ईश्वर व जीवात्मा का सम्बन्ध नित्य, सनातन व शाश्वत है। ईश्वर ही हमारा राजा है, हम उसकी प्रजा हैं यह भी वेद ही हमें बताते हैं। वेद से ज्ञात होता है कि हमारा जन्म पूर्व जन्मों में किए गये कर्मो के फल भोगने के लिए हुआ है। हमारा अगला जन्म बचे हुए कर्मो व नये कर्मो के आधार पर होगा। अच्छे कर्मो को करने से हमारी उन्नति होगी व बुरे कर्मो के करने पर हमें निम्न - कीट, पतंग, पशु, पक्षियों व वृक्ष आदि की योनियां प्राप्त होगीं। यह बात काल्पनिक नहीं अपितु तर्क के आधार सर्वथा सत्य व प्रमाणिक है। कर्म विना भोगे समाप्त नहीं हो सकते। कर्म-फल को जानकर ज्ञानी मनुष्य अनैतिक कार्यो का त्याग कर समाज के हित के कार्य करता है। वेदों से हमें अपनी दिनचर्या का ज्ञान भी होता है। वेद बताते हैं कि सभी जीव एक समान है। कोई छोटा-बड़ा या ऊंचा-नीचा नहीं है। वेदों को पढ़ने व प्रचार करने का सबको बराबर अधिकार है। स्त्री व शूद्रों अर्थात् अशिक्षितों को भी वेद ज्ञान प्राप्त कर सबके समान उन्नति का अवसर देता है। वेद की शिक्षा है कि सभी प्राणियों में स्वयं को और स्वयं में अन्य प्राणियों को देखों जिससे तुम्हारा शोक व मोह समाप्त होकर स्थिर सुख की अनुभूति हो सके। इस ज्ञान को न पाकर मनुष्य सदैव संशय की स्थिति में पड़ा रहकर दुःखी रहता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की वैदिक भावना भी वेद की देन है, जो अन्यत्र देखने में नहीं मिलती। दुःख है कि आज भी अनेक मजहब व सम्प्रदाय धर्मान्तरण की गुप्त योजना बना कर व प्रलोभन देकर लोगों का धर्मान्तरण करते हैं। वेदेतर शिक्षाओं के कारण लोग भोगों में लिप्त रहते हैं जिससे वह रोगी व अल्पायु हो रहे हैं। वेद का यह लाभ भी है कि वह भोगों को सीमित कर रोगों व क्लेशों से बचाता है। समानता पर आधारित नया विश्व, जिसमें कोई किसी का शोषण न करे, किसी के साथ अन्याय न हो, सब एक दूसरे को आगे वढ़ायें, इस स्वप्न को वेदों की शिक्षाओं को अपनाकर ही सत्य सिद्ध किया जा सकता है। प्रजातन्त्र, समाजवाद, साम्यवाद, अधिनायकवाद आदि सभी वादों को आजमाया जा चुका है, अब वेद की शिक्षाओं के अनुरूप समाज का निर्माण कर विश्व शान्ति के लक्ष्य को पूरा करने की बारी है। वेद यह भी बताता है कि राजा को पिता के समान प्रजा का पालन करना चाहिये और प्रजा को राजा को पिता मानकर उसकी आज्ञाओं का पालन करे व सहयोग करें। वेद की शिक्षाओं पर चलकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए यश व कीर्ति के साथ मृत्यु के पश्चात मनुष्य मोक्ष, अपवर्ग या निःश्रेयस प्राप्त करता है जो अन्य मत-मतान्तरों से कदापि प्राप्त होने वाला नहीं है। अन्य मत व सम्प्रदाय जिस कल्पित स्वर्ग का चित्रण करते हैं वह तर्क से भी सिद्ध नहीं होता, अतः मिथ्या हैं। वेद पर्यावरण सुरक्षा की शिक्षा भी देता है। यज्ञ वेदों की एक विशिष्ट देन है जिससे आत्मोत्थान व अदृष्ट फल के साथ पर्यावरण को लाभ होता है। यज्ञ को सारे संसार का केन्द्र व नाभि बता कर वेद कहता है कि सारी विश्व की समस्यायें यज्ञ की भावना से हल की जा सकती है। वेद को अपना कर सभी व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान ढूंढा जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि वेद आज भी प्रासंगिक, सार्थक, उपयोगी व मनुष्यमात्र के लिए अपरिहार्य हैं।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,दूरभाषः 09412985121

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन की सचित्र झलकियां

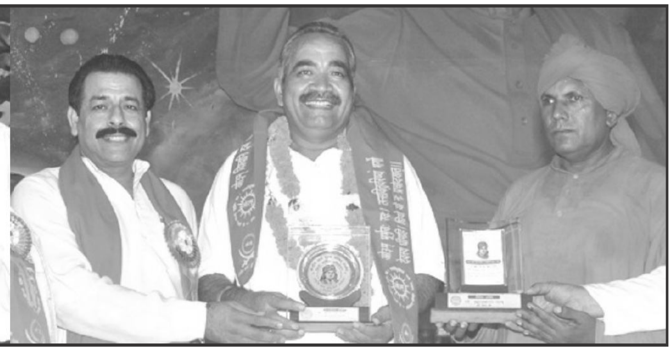

''आर्य युवा रत्न'' सम्मान से श्री अर्जुनदेव वर्मा (करनाल) को सम्मानित करते श्री महेश भार्गव, डा.अनिल आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री हरेन्द्र चौधरी द्वितीय चित्र में चौ.ब्रह्मप्रकाश मान (प्रधान, गुरुकुल खेड़ा खुर्द) का स्वागत करते डा.अनिल आर्य व स्वामी श्रद्धानन्द जी।

आचार्य हीराप्रसाद शास्त्री को सम्मानित करते आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री दीनानाथ बत्रा, श्री चन्द्रशेखर शर्मा, डा.अनिल आर्य, श्री मायाराम शास्त्री व श्री अशोक मंगला को सम्मानित करते वीरेन्द्र योगाचार्य, वीरेन्द्र आहूजा, स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री आनन्दप्रकाश आर्य(हापुड़), श्री जितेन्द्रसिंह आर्य, डा.अनिल आर्य व श्री ओम सपरा।

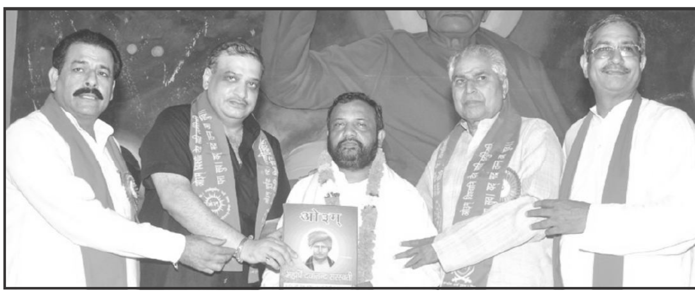

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री नीरज रायजादा, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री महेन्द्र भाई जी व द्वितीय चित्र में श्री नीरज रायजादा व श्री बृजमोहन अग्रवाल का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री देवेन्द्र भगत, श्री मायाप्रकाश त्यागी.

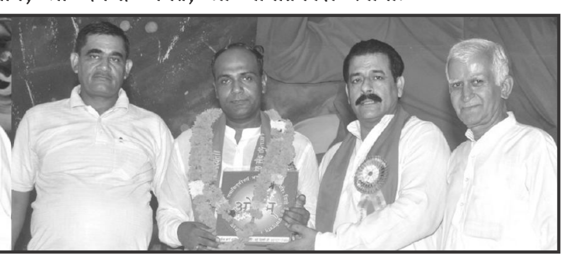

आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री रमेश आर्य (जम्मू), श्री नरेन्द्र आर्य(हापुड़), श्री भारतेन्द्र मासूम, श्री सुभाष बब्बर(जम्मू), श्री भारतेन्दू आर्य(बिहार) द्वितीय चित्र में आचार्य वीरेन्द्र विक्रम का स्वागत करते श्री सजीव ढाका (बागपत), डा.अनिल आर्य, प्रो.जयप्रकाश आर्य (पलवल)

(पृष्ठ 1 का शेष)

जिससे अन्य लोग प्रेरणा ले सकें। स्वामी सौम्यानन्द जी, परिषद् के महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, प्रवीनआर्य (गाजियाबाद), आचार्यप्रेमपाल शास्त्री, मित्रमहेश आर्य(अहमदाबाद), रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), भारतेन्दू कुमार (बिहार), सुभाष बब्बर (जम्मू), आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री, योग निकेतन के मंत्री श्री रामेश्वर गोयल, चौ. ब्रह्मप्रकाश मान (प्रधान,गुरूकुल खेड़ाखुर्द), स्वामी नकुलदेव जी (उड़ीसा), श्री भारतेन्द्र 'मासूम', रमेश योगी, चन्द्रशेखर शर्मा, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, विजय आर्य (चण्डीगढ), स्वतन्त्रकुकरेजा (करनाल), चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य सतीश सत्यम्, दिलबाग सिंह आर्य, मनोहरलालचावला (सोनीपत), आनन्दप्रकाशआर्य (हापुड़), वीरेन्द्र योगाचार्य, रमेश चन्द स्नेही (हरिद्वार), श्री मायाप्रकाश त्यागी, समाजसेवी श्री नीरज रायजादा, बृजमोहन अग्रवाल, श्री दीनानाथ बत्रा, अंकित उपाध्याय, वीरेन्द्र विक्रम, योगेन्द्र शास्त्री, पार्षद यशपाल आर्य, संतोष शास्त्री, कृष्णचन्द पाहूजा आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का शुभारम्भ ब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय ने यज्ञ करवा कर किया। पं.हीराप्रसाद शास्त्री (दिल्ली), अर्जुनदेव वर्मा (करनाल), अशोक मगंला (फरीदाबाद) को ''आर्य युवा रत्न'' अवार्ड से सम्मानित किया गया। सम्मेलन को सफल बनाने में श्री विश्वनाथ आर्य, धर्मपाल आर्य, ओमबीर सिंह, सौरभ गुप्ता, रविन्द्र मेहता, रवि चड्डा, सुरेन्द्र मानकटाला ,दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य,सुदेश भगत, देवेन्द्र भगत, प्रकाशवीर शास्त्री, चतरसिंह नागर, जितेन्द्र डावर, राजेश मेहन्दीरता, सुशील आर्य, जितेन्द्र सिंह आर्य, प्रवीन आर्य, आनन्दप्रकाश आर्य, हरिचन्द स्नेही, हरेन्द्र चौधरी, योगेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, प्रभा सेठी, विजयारानी शर्मा, हरिचन्द आर्य, के.एल.राणा, मुकेश सुधीर, शिशुपाल आर्य, अर्चना पुष्करणा, सन्तोष वधवा, ओम सपरा, गोपाल जैन, नरेन्द्र सुमन, प्रेम बिन्द्रा, रामकृष्ण सतीजा आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा। सभी के लिए ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। लगभग 2000 आर्य जनों ने भोजन का आनन्द लिया।

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन भव्यता से सम्पन्न

समारोह अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान का अभिनन्दन करते डा.महेश विद्यालंकार, श्री दर्शन अग्निहोत्री व डा.अनिल आर्य द्वितीय चित्र में डा.महेश विद्यालंकार का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, श्री रवि चड्डा, श्री चन्द्रशेखर शास्त्री व श्री मायाराम शास्त्री।

गुरूकुल एटा के आचार्य वागीश जी का स्वागत करते श्री रवि चड्डा, श्री दर्शन अग्निहोत्री व डा.अनिल आर्य एवम् दीप प्रज्ज्वलित करते श्री दर्शन अग्निहोत्री

'ओ३म्' की पावन पताका लहराते मंच पर डा.अशोक कुमार चौहान व श्री जोगेन्द्र सिंह के साथ डा. अनिल आर्य, श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), श्री रवि चड्डा, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री रामेश्वर गोयल, श्री दर्शन अग्निहोत्री, डा.महेश विद्यालंकार, श्री यशपाल आर्य(पार्षद), श्री सुभाष बब्बर (जम्मू)

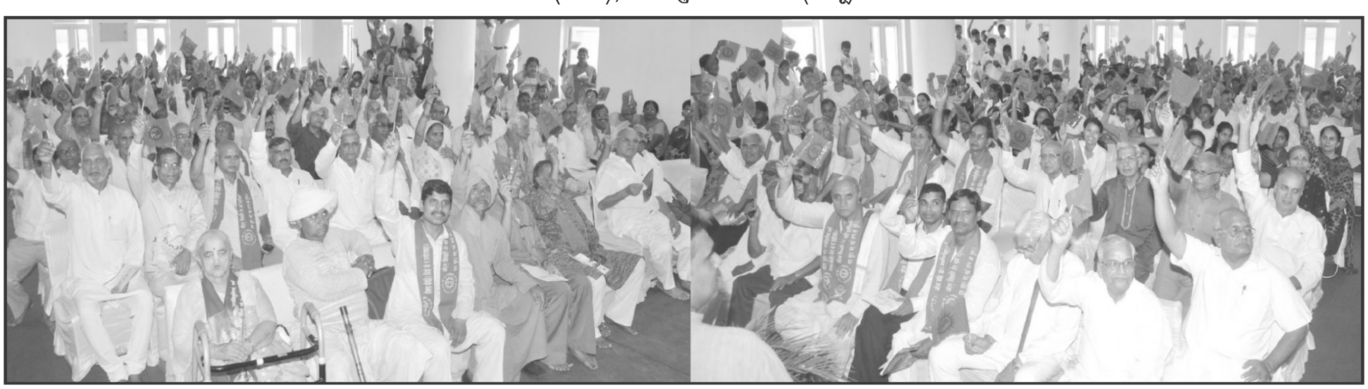

'ओ३म्' ध्वज लहराते आर्य जन पूरे उत्साह के साथ एक विहंगम द्रश्य। जोश - उमंग व उत्साह का दूसरा नाम है आर्य युवक परिषद्। राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन की शानदार सफलता के लिये हम अपने सभी सहयोगियों का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970